IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 5, September-October 2024

Impact Factor: 7.394

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105032

वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गांधी जी के विचारों की उपादेयता

Dr. Dayachand

Assistant Professor in Political Science, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, India

शोध सार: वर्तमान में विश्व अनेक समस्याओं से त्रस्त है जिसमें हिंसा, आतंकवाद, गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि कई समस्याएं विश्व राजनीति के समक्ष विद्यमान हैं। इसमें यह जानने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान समय में गाँधी जी के विभिन्न विचार इतने प्रासंगिक सिद्ध हो सकते है ? अथवा ऐसे कौनसे प्रयास किये जाए, जिससे विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया जा सकें ? इन समस्याओं के कारण मानव के जीवन का लगभग प्रत्येक पक्ष प्रभावित हो रहा है। अतः मान्यता की भावना को जीवित रखने एवं विश्व के प्रत्येक नागरिक का जीवन सुरक्षित रखने हेतु गांधी दर्शन एक प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है, इसी दिशा में प्रयास किये गये हैं।

स्थानीय स्तर से विश्व के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करने वाला गांधी दर्शन वर्तमान समस्याओं से किस प्रकार लड़ सकता है ? अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गांधीजी के विचारों का विस्तार कितनी व्यापकता लिये हुये हैं? आज हम इस ग्लोबल विश्व के समक्ष जो विश्व स्तरीय चुनौतियां हैं, उन्हें देखते हुए गांधी दर्शन आज भी उतना ही स्वीकार्य है जितना पहले था, शायद उससे भी कहीं ज्यादा। वर्तमान समाज में लक्ष्य प्राप्ति करने एवं अन्याय पूर्ण समाज का विरोध करने के तरीके सर्वाधिक भ्रष्ट रूप ले रहे हैं। अतः लक्ष्य प्राप्ति हेतु साधनों की पवित्रता एवं अन्याय का विरोध करने हेतु सत्याग्रह की अवधारणा सीधे तौर पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। गांधी दर्शन संपूर्ण विश्व को एक नया दिशा-बोध दे रहा है। गांधी दर्शन इस सदी की एक जीवन पद्धति है। आज जब विश्व एक नए ध्रुवीकरण की ओर अग्रसर है तो गांधी दर्शन इस नई सदी में और भी समसामयिक और प्रासंगिक हो गया है। विश्व के प्रत्येक कोने तक गांधीजी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधीजी के बारे में कहा था कि "भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड मास से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।" गांधी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि करुणा, सहिष्णुता और शांति के दृष्टिकोण से भारत और दुनिया को बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित करने पर जोर दिया और साथ ही दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया। साथ ही महात्मा गांधी ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक नेताओं जैसे मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लेटिन अमेरिका, एशिया, मध्य पूर्व तथा यूरोप में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित किया। अमेरिका, एशिया, यूरोप, अफ्रीका में कई क्रांतियां ऐसी हुई जिन पर गांधीजी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ा और जो अंततः सफल भी हुई। जिनके बाद अन्याय की स्थिति में बदलाव आया। किंतु वर्तमान विश्व राजनीति की स्थिति को ध्यान में रखते हुए गांधीवादी सिद्धांतों की व्यावहारिक जीवन में और अधिक उपयोगिता अनुभव की जा रही है।

मुख्य शब्द: सत्य और अहिंसा, धर्म और नैतिकता, मानव का मशीनीकरण, बुनियादी शिक्षा, विश्व बन्धुत्व।

I. विषय विस्तार

बीसवीं सदी मूलतः परिवर्तन की सदी रही है। इस काल में समाज के शोषित पीड़ित वर्ग के लिए अनेक आन्दोलन हुए। यथा- रूस की बोल्शेविक क्रान्ति, भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति के विरूद्ध आन्दोलन, चीन में सामंती राजशाही का अन्त और जनवादी चीन की स्थापना आदि। इस काल में ही राज्यों द्वारा अपना वर्चस्व सिद्ध करने के प्रयास में दो-दो महायुद्ध हुए हैं। प्रथम युद्ध में हुए नरसंहार की पीड़ा से विश्व उबर भी नहीं पाया था कि द्वितीय युद्ध में परमाणु शक्ति की विध्वंसात्मकता ने विश्व को दहला दिया। युद्ध की विभीषिका से विश्व को बचाए रखने के संकल्प के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया। जिसका उद्देश्य विश्व से युद्ध को समाप्त करना था किन्तु यह सम्भव नहीं हो पाया और युद्ध नये कलेवर के साथ उभरकर आया जिसे 'शीत युद्ध' की संज्ञा दी गयी। युद्ध का स्वरूप कोई भी हो, अन्तिम परिणाम मानवता की हानि ही होती है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सम्पूर्ण मानव जाति नवीन आशा और अभिलाषा के साथ भविष्य की ओर देख रही है। एक ओर विज्ञान और तकनीक ने मानव के लिए अपार वैभव प्रस्तुत कर दिया है वहीं दूसरी ओर समाजिक जीवन में बढ़ती हिंसा और प्रतिस्पर्धा ने मानव के अस्तित्व के लिए ही संकट उत्पन्न कर दिया है। यद्यपि यह परिवर्तन एक-दो वर्षों में नहीं हुआ है, यह लम्बी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। जब हम इतिहास में पिछली सदी की ओर देखते हैं तब हम पाते हैं कि बीसवीं सदी अन्तर्विरोधों की सदी रही

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105032

है। इस सदी ने साम्राज्यवाद के विस्तार के विरूद्ध रक्तिम जन आन्दोलन देखी है। इसी सदी ने दो-दो महायुद्धों के रूप में वीभत्स नर संहार भी देखे हैं। इन सबके विपरीत सत्य और अहिंसा पर आधारित जन आन्दोलन की शक्ति भी देखी है। इन आन्दोलनों के साथ युग प्रवर्तक विचारकों के नाम जुड़े हुए हैं जिनके विचार ने विशाल जन समूह को स्फूर्त किया। इन जन आन्दोलनों में एक ओर कार्ल मार्क्स का नाम जुड़ा है जिनके वैचारिक पक्ष को यथार्थ में परिवर्तित करने का प्रयास सोवियत रूस में लेनिन ने, चीन में माओ त्से तुंग ने, वियतनाम में हो ची मिन्ह ने किया। इसके परिणाम स्वरूप पूरे विश्व को यह विश्वास हो गयाथा कि निरकुंश सता से मुक्ति हेतु रक्तिम क्रान्ति आवश्यक है। इन्हीं विचारों के साथ समाज के दुःखी, शोषित, पीड़ित जन के लिए आन्दोलन करने वाले अनेक विचारक हुए जिनके यशगान उनके समय और क्षेत्र में भले ही निनादित होते रहे हों किन्तु वैश्विक स्तर पर उन्हें वह सम्मान नहीं मिला।

इन विचारों से पृथक सोच के साथ भारत में जन्में महात्मा गांधी ने प्रमाणित कर दिखाया कि सत्य और अहिंसा की शक्ति सबसे बड़ी और स्थायी शक्ति है। अस्त्र-शस्त्र रहित अहिंसात्मक आन्दोलन, हिंसात्मक आन्दोलन से भी अधिक गहरा और प्रभावपूर्ण होता है। जिसका उपयोग गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में मानवता की रक्षा हेतु सबसे पहले किया था। दक्षिण अफ्रीका में मिली सफलता ने विश्व को यह विश्वास दिलाया कि हिंसात्मक क्रान्ति से अधिक प्रभावी अहिंसात्मक आन्दोलन है जहाँ विरोधी भी नतमस्तक हो जाते हैं। दक्षिण अफ्रीका में जनरल स्मट्स जो गांधी जी को कट्टर शत्रु मानते थे, उसने भी यह स्वीकार किया कि "मैं ऐसा महसूस करता हूं कि मैं उस महान व्यक्ति के चरण चिन्हों पर खड़े होने के भी योग्य नहीं हूं"। गांधी जी के ही नेतृत्व में निरंकुश अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध भारतीय भूमि पर भी राष्ट्रव्यापी आन्दोलन हुआ। इस आन्दोलन में स्त्री-पुरूष, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब सभी का स्वागत किया गया किन्तु हिंसा को स्थान नहीं मिला।

जिस समय गांधी जी का भारतीय राजनीति में अवतरण हुआ था, उस समय अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध भारत में चल रहे आन्दोलन उदारवाद और उग्रवाद के द्वन्द्व में उलझा हुआ था। ऐसे समय में गांधी जी "एक मात्र सच्चे प्रतीक, प्रणेता और प्रेरक के रूप में उभरे" और असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि के नेतृत्व करते हुए लगभग तीस वर्षों तक भारत के राजनीतिक मंच पर छाए रहे। किन्तु कुछ आलोचक गांधी जी को राजनीतिक विचारक मानने से ही परहेज करते हैं, उनका कहना है कि गांधी जी ने किसी वाद की रचना नहीं की है। यह सत्य है कि गांधी जी क्रमबद्ध राजनीतिक चिन्तक नहीं थे किन्तु इससे भी बढ़कर वे एक उत्प्रेरक, शिक्षक और संत थे, जिनका उद्देश्य कोरे सिद्धान्त की रचना करना नहीं था। वे सच्चे वैज्ञानिक की तरह निरन्तर शोध में लगे रहे। उनके शोध का क्षेत्र 'सत्य' था, जिसमें प्राप्त अनुभूति के संकलन को 'सत्य के साथ प्रयोग' की संज्ञा देकर प्रस्तुत किया। उन्होंने समान रूप से व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में सत्य को कर्म का प्रतिमान माना। उनके लिए सत्य ही शाश्वत जीवन मूल्य है और सत्याग्रह जीवन व्यवहार, जिसे उन्होंने "सत्य की शक्ति, प्रेम की शक्ति और आत्म शक्ति के रूप में परिभाषित किया है।"- नीति विहीन राजनीति का उनके लिए कोई महत्व नहीं था। वे नैतिक निरपेक्षवाद में विश्वास रखते है। उन्होंने हर स्तर पर राजनीति को आध्यात्म से आबद्ध करने के लिए राजनीति का आध्यात्मीकरण किया। उनके लिए आध्यात्मिकता पारलौकिक जीवन के लिए नहीं इस लौकिक जीवन के लिए ही थे। अतएव गांधी जी कोरे राजनीतिक विचारक की तुलना में आध्यात्मिकता एवं वैज्ञानिकता से परिपूर्ण राजनीतिक संत थे। धर्म और नैतिकता किसी भी व्यक्ति और राज्य के राजनीतिक वतावरण के लिए ज्वलंत मुद्दा है। धर्म को प्रशासन के लिए बाधक मानते हुए आधुनिक राजनीति विज्ञान के जनक मैकियाविली ने राज सत्ता से धर्म को पृथक रखने का सुझाव दिया, साम्यवाद के जनक कार्लमार्क्स ने धर्म को अफीम कहा है। धर्म की अपूर्ण व्याख्या तथा नकारात्मक दृष्टिकोण से विश्व के अधिकतर राज्यों ने संवैधानिक स्तर पर धर्म निरपेक्षता की नीति अपना रखी है। इसके बाद भी धर्म के नाम पर विवाद यहाँ तक रक्तिम संघर्ष भी होता रहता है।

अतएव पुनः धर्म की व्याख्या की आवश्यकता है। गांधी जी की धर्म के प्रति गहरी आस्था थी किन्तु उनकी यह धार्मिक भावना धर्मान्धता अथवा धार्मिक कट्टरता नहीं थी। वे आत्मानुशासन के लिए धर्म को आवश्यक मानते थे। उन्होंने धर्म और राजनीति का समन्वय कर 'धर्मनिरपेक्ष राजसत्ता' को स्वीकार किया है। उनके अनुसार धर्म का राजनीतिकरण के स्थान पर राजनीति में धर्म और नैतिकता का समावेश होना चाहिए। उनका मानना है कि मनुष्य की श्रेष्ठता उसकी नैतिकता के कारण है और धर्म ही समस्त कार्यवाहियों को नैतिक आधार प्रदान करता है। अतः प्लेटो और काण्ट की तरह गांधी जी राजनीति में नैतिकता को महत्व देते हुए विश्व राजनीति में आध्यात्मिकता और नैतिकता के माध्यम से विश्व बंधुत्व का भाव विकसित करना चाहते थे। विश्व गवाह है कि जहाँ कहीं भी धर्मान्धता की बात चली है, वहाँ पतन ही हुआ है फिर चाहे अफगानिस्तान ही क्यों न हो। आज हो रहे धर्म का राजनीतिकरण तथा हिंसा को रोकने के लिए गांधी जी की धार्मिक भावना को समझने की नितान्त आवश्यकता है जिसमें समस्त जीव तथा प्रकृति के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना छिपी है। गांधी जी द्वारा प्रस्तुत धर्म की यह व्याख्या श्रेष्ठ और सर्वमान्य है। इसके माध्यम से ही विश्व कल्याण सम्भव है।

गांधी जी आत्मनिर्भर ग्रामीण व्यवस्था की कल्पना करते थे। इस हेतु उन्होंने विस्तृत कार्य योजना प्रस्तुत किया था। भारत की स्वतंत्रता के बाद गांधी जी के कुटीर उद्योग और स्वदेशी के सिद्धान्त को प्रतिगामी समझते हुए उनके विचारों को अपनाने के स्थान पर उन्हेंपूजा की वस्तु बना दिया गया। परिणाम यह हुआ कि भारत की आर्थिक स्थिति बदतर होती चली गयी। गांधी जी एक व्यवहारिक

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105032

अर्थशास्त्री थे। उनकी आर्थिक योजना में समाजवाद और साम्यवाद का समन्वय है किन्तु वे वर्ग संघर्ष के द्वारा पूंजीवाद का अन्त नहीं चाहते हैं। उनकी योजना में पूंजीपति का नैतिक और गरीबों का आर्थिक उत्थान द्वारा सर्वोदय का भाव निहित है। यद्यपि स्वतंत्रता आन्दोलन के विभिन्न कार्यक्रमों में गांधी जी का 'स्वदेशी सूत्र' अपनी प्रमाणिकता सिद्ध कर चुका था। किन्तु खेद है कि स्वतंत्र भारत में उनके स्वदेशी सूत्र को संकुचित करते हुए उसे मात्र खादी तक ही सीमित कर दिया गया। गांधी जी के आत्मनिर्भरता के मंत्र को छोड़ कर विदेशी पूंजी और तकनीक के भरोसे जीना सीख लिया गया और अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी विदेशी वस्तुओं का उपयोग को सम्मान का सूचक मान लिया गया। इससे देश में बेरोजगारी, गरीबी, भूख एक विकट समस्या बन गई है। गांधी जी ने जिस प्रकार स्वदेशी का उद्घोष करते हुए कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल दिया है। उससे स्थानीय स्तर पर आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही बेरोजगारी की समस्या का समाधान भी सम्भव होगा।

अमेरिका आज विश्व का नेतृत्व कर रहा है। इसके पीछे अमेरिका की द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक 'पृथकतावादी नीति के साथ स्वदेशी' की नीति भी रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के विध्वंस के बाद पुनः जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उठ खड़ा हुआ, इसका मुख्य कारण वहां की 'स्वेच्छा से स्वदेशी' का सिद्धान्त' ही है। यद्यपि भारत के पिछड़ेपन के लिए विशाल जनसंख्या को उत्तरदायी माना जाता है किन्तु यह भी सत्य है कि भारत से भी अधिक जनसंख्या वाला चीन का बाजार पूरे विश्व में वहाँ के कुटीर उद्योग के कारण ही है। जर्मनी भी अपने कुटीर उद्योगों के कारण ही विश्व बाजार में छाया है। इन उदाहरणों से प्रमाणित होता है कि आधुनिक समय में भी भूख, बेरोजगारी विपन्नता से मुक्ति हेतु गांधी जी के आर्थिक योजना को अपनाना ही एक मात्र विकल्प है। गांधी जी द्वारा उद्घोषित असहयोग आन्दोलन के सौ वर्ष बाद कोरोना महामारी के समय घर-घरबनने वाले मारक व सेनेटाइजर ने प्रमाणित कर दिया कि आज भी जनसंख्या को जनशक्ति में बदलकर कुटीर उद्योग के माध्यम से स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव है। देश भर में कौशल विकास केन्द्र की स्थापना और युवाओं को विभिन्न कौशल का प्रशिक्षण देना, नई शिक्षा नीति में कौशल आधारित पाठ्यक्रम होना, 'वोकल फॉर लोकल' मेक इन इंडिया-फॉर द वर्ल्ड, लोकल गोज ग्लोबल, आत्मनिर्भर भारत, एक जिला एक उत्पाद, स्टार्टअप इन्डिया आदि ऐसी योजनाएँ हैं जो गांधी जी की आर्थिक योजना की प्रासंगिकता प्रमाणित करती है। तीव्र गति से हो रहे यंत्रीकरण से स्वचालित मशीन आ गई हैं। अब मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन किन्तु यांत्रिक संस्कृति का उतरोत्तर विकास हो रहा है। स्वतंत्रता की बात करने वाला मानव अनजाने में ही सही परन्तु स्वेच्छा से यंत्रों की गुलामी स्वीकार कर चुका है। अत्यधिक यंत्रीकरण से उत्पन्न गुलामी से मानव में वैचारिक जड़ता आ रही है। वह चारों ओर अवसाद से घिरता जा रहा है। पूरा विश्व आज मशीनीकरण के दुष्परिणाम को समझने लगा है। यहाँ इवान इलिच की यह दलील उचित लग रही है- "कोई सौ साल से हम प्रयास कर रहे है कि मशीन मानव की सेवा करें, किन्तु हम मानव को मशीन की सेवा करने का प्रशिक्षण देते आ रहे हैं।"-गांधी जी मानव के इसी यंत्रीकरण से चिन्तित थे। उनके सिद्धान्त मेंनियमित चरखा चलाने अथवा कीर्तन करने से तात्पर्य मानव को यंत्र का पुर्जा बनने से बचाना था। वे युग दृष्टा थे अतएव अपनी दिव्य दृष्टि से अति औद्योगीकरण तथा विज्ञान के विध्वंसात्मक उपयोग के दुष्परिणाम को पहले ही देख चुके थे। इन्हीं कारणों से गांधी जी आत्मनिर्भर गाँव बनाने के पक्ष में थे। वे कुटीर उद्योगों में काम आनेवाले नये उपकरणों की खोज तथा उत्पादन के समर्थक और बेरोजगारी के रहते मशीनीकरण के दीवानेपन के विरोधी थे।

अविकसित तथा विकासशील राष्ट्रों के समक्ष अपने राज्य के सम्पूर्ण जन के लिए भरण पोषण के साथ शिक्षा का लोक व्यापीकरण भी एक विकट समस्या है। स्थिति यह है कि अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र भी शत-प्रतिशत साक्षर राष्ट्रों की श्रेणी में नहीं है, ऐसे में भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह और भी कठिनहै। यद्यपि आर्थिक उदारीकरण की नीति के अनुरूप अन्तराष्ट्रीय सहयोग से प्राथमिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण का प्रयास किया गया। किन्तु परिणाम आशा के अनुकूल नहीं रहा, अतः प्रश्न है कि क्या इस तरह की विदेशी सहायता से शिक्षा का लोकव्यापीकरण सम्भव है? गांधी जी ने इस तरह की व्यवस्था को सन् 1937 ई० के वर्धा सम्मेलन में चुनौती देते हुए भारतीय वतावरण के अनुकूल शिक्षा योजना प्रस्तुत किया था जिसे उन्होंने 'बुनियादी शिक्षा अथवा नई तालीम कहा था। इस पद्धति में व्यक्ति के वैक्तिक गुणों एवं अभिरूचियों के अनुसार राज्य द्वारा नियंत्रित मातृभाषा में सभी के लिए समान शिक्षा के साथ कौशल आधारित व्यवसायिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस तरह गांधीजी विदेशी अनुदान पर महँगी शिक्षा के स्थान पर स्वदेशी तथा आत्मनिर्भर शिक्षा को स्वीकार कियाथा। फिनलैंड, नार्वे जैसे राष्ट्र शत-प्रतिशत साक्षर राष्ट्र है। आज फिनलैंड की शिक्षा पद्धति पूरे विश्व के लिए आकर्षण का विषय बना है। यहाँ मातृभाषा में राज्य द्वारा नियंत्रित और अनिवार्य सामान्य शिक्षा के साथ कौशल आधारित व्यवसायिक शिक्षा दी जाती है। यह पद्धति महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत नई तालीम' की प्रासंगिकता स्वतः प्रमाणित करती है।

गांधी जी के अनुसार शिक्षा केवल साक्षरता नहीं है, शिक्षा का उद्देश्य '3-एच' (हेड, हार्ट और हैण्ड) अर्थात् शरीर, मन और आत्मा का सामन्जस्य है। इसी सामन्जस्य से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक विकास होता है। गांधी जी के शब्दों में "साक्षरता न तो शिक्षा का आरम्भ है और न अन्त यह तो शिक्षा का माध्यम मात्र है।"- अतएव गांधी जी साक्षरता के साथ विभिन्न हस्तकला एवं क्रिया द्वारा सीखने पर बल देते थे। आधुनिक मनोवैज्ञानिक और शिक्षाविद् भी 'क्रिया द्वारा शिक्षण' पद्धति को अध्ययन का श्रेष्ठ पद्धति मानते हैं। गांधी जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा योजना में आदर्शवाद, शारीरिक श्रम के साथ बालकों की अभिरूचि अनुसार कौशल की शिक्षा भी सम्मिलित है। इस शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण के साथ रोजगार हेतु बालक को तैयार करना है। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस शिक्षा प्रणाली को "स्वराज्य की चाभी" कहा है। यह शिक्षा योजना भारत के साथ ही सम्पूर्ण विश्व के लिए समय की माँग है। यद्यपि

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105032

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत गांधी जी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा योजना के अनुरूप भारत की शिक्षा पद्धति को ढालने का प्रयास किया जा रहा है।

वैश्वीकरण के इस युग में भूख, गरीबी, बेचारगी आदि समस्याओं का भी विश्व व्यापीकरण हो गया है। इन समस्याओं के निराकरण हेतु राष्ट्र आर्थिक और व्यापारिक आधार पर जुड़ने लगे हैं। वैश्विक स्तर पर अनेक नीतियाँ बनाई गयी जिनके क्रियान्वयन हेतु विश्वबैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व व्यापार संगठन आदि जैसे अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन सक्रिय हो गये। यद्यपि इससे अन्तर्राज्यीय व्यापार को बढ़ावा मिला किन्तु बाजारवाद या उपभोक्तावाद की संस्कृति उभरकर आयी। वस्तुतः यह उपनिवेशवाद का नवीनस्वरूप है जिसमें बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अधिक से अधिक लाभ कमाने की होड़ में है। फलतः मानव मानवता को खोकर एक अंक मात्र बनकर रह गया है। ऐसे में पुनः गांधी जी याद आते हैं जिन्होंने मानव को मानव बने रहने की सलाह दी थी तथा सत्य, अहिंसा, अनाशक्ति को जीवन में अपनाने को कहा था।

विश्व दो-दो महायुद्ध और युद्ध के दौरान परमाणु बम की विभीषिका को देख चुका है फिरभीआपसी मतभेद के निराकरण हेतु युद्ध की अनिवार्यता को स्वीकार किये हुए है। इन्हीं सोच के साथ द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद युद्ध नए स्वरूप में आया जिसे शीत युद्ध की संज्ञा दी गयी। इस काल में राज्यों द्वारा अपनी सीमाओं तथा नागरिकों की सुरक्षा के लिए आण्विक शक्ति का भी विस्तार किया गया किन्तु इससे न तो विवाद का अन्त हो पाया और न ही मानव की सेवा। शस्त्रों की इस होड़ से विश्व में लगभग चार दसक तक शीत युद्ध चलने के बाद भी विश्व में शान्ति सम्भव नहीं हो पायी है, इसके विपरीत यह आण्विक शक्ति मानव के अस्तित्व के लिए ही घातक बन गयी है।

शीत युद्ध के पराभव के तीन दशक बाद ही 24 फरवरी 2022 को सोवियत रूस द्वारा युक्रेन पर हुए हमले के साथ सोवियत युक्रेन युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में हो रहे विध्वंस से पूरा विश्व चिन्तित है। इससे केवल युक्रेन का ही विनाश नहीं हो रहा है इसमें सोवियत रूस को भी भारी नुकसान हो रहा है। अब यह युद्ध परमाणु युद्ध की चेतावनी दे रहा है जिससे विश्व चिन्तित है। अतएव आज सभी यह तथ्य स्वीकार कर चुके हैं कि विवादों के निराकरण शान्ति पूर्वक वार्ता से किया जाना चाहिए युद्ध से नहीं। यह सत्य है कि आज इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि जो हिंसा पहले बिखरे रूप में दिखायी देती थी अब केन्द्रीभूत विस्फोटक अवस्था में है। फलतः विवेक और संयम का एक तार किसी भी स्तर पर टूटने से सर्वनाश के तांडव से विश्व को बचाना सम्भव नहीं होगा। इस विकट स्थिति में हमें गांधी जी को याद करना चाहिए। उन्होंने कहा था 'अन्धकार के महल में भी प्रकाश कायम रहता है।'-

गांधी जी सर्वदा हिंसा के स्थान पर अहिंसा की वकालत करते रहे हैं। उनका सुझाव था संसार के सारे प्रबुद्ध जनमत के प्रतिनिधियों का विशाल संगठन तैयार किया जाए जो अहिंसात्मक तरीके से अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का मार्ग खोज सके। गांधी जी का सत्य और अहिंसा कोरा सिद्धान्त नहीं था। उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों का प्रयोग कर जिस तरह दक्षिण अफ्रीका में सफलता पाई और निःशस्त्र भारतीयों में आत्म बल का संचार किया यह पूरे विश्व के लिए एक आश्चर्य का विषय था। आज की परिस्थितियों में अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के निराकरण के लिए अहिंसक प्रत्यक्ष कार्यवाही के गांधीवादी तरीके को अपनाये जाने की पूर्व की अपेक्षा अधिक आवश्यकता है। उनके अनुसार विश्व शान्ति के लिए हमें राष्ट्रवाद की संकुचित सोच से आगे बढ़ना होगा और प्रतियोगिता नीति के स्थान पर सहयोग नीति को अपनाना होगा। गांधी जी के सिद्धान्तों का मूल उद्देश्य शान्ति स्थापना है इससे ही होकर विश्व बन्धुत्व एवं अन्तर्राष्ट्रीयता का मार्ग प्रशस्त होता है। मार्टिन लूथर किंग भी गांधी जी के अहिंसा के मार्ग का समर्थन करते हुए विश्व को अगाह किया था कि यदि युद्ध हुआ तो लाशों की ढेर पर बैठ कर रोने वाला भी नहीं बचेगा।"

अतएव गांधी जी युग दृष्टा ही नहीं युग सृष्टा भी थे। वे केवल अपने युग के लिए ही नहीं, आगे आने वाले कई युगों के लिए सोचते हैं। वे केवल आदर्शवादी ही नहीं वे यथार्थवादी भी थे। वे एक साथ महान राजनीति शास्त्री, अर्थशास्त्री, शिक्षाविद् आध्यात्मिक, धार्मिक और विश्व मानव के कल्याण की चिन्ता करने वाले बहुकोणीय विचारधारा वाले वैज्ञानिक सन्त थे । उनके दर्शन में विश्व के प्रत्येक कोने से सन्तों की शिक्षाओं का समन्वय है। किन्तु आधुनिक युग की आर्थिक अंधी दौड़ में खोकर गांधी जी की विचारधारा को प्रतिगामी समझने की भूल कर रहा है। मानव और राज्य भले ही इधर- उधर कितना भी भटक जाए अन्ततः गांधी जी के सिद्धान्तों को स्वीकार करना ही पड़ता है। उनकी धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा का एक मात्र उद्देश्य सम्पूर्ण मानवता की रक्षा करना है। डॉ. जाकिर हुसैन के शब्दों में "गांधी जी का कोई विशिष्ट रचनात्मक कार्य आगे चलकर चाहे इतिहास की वस्तु भले बन जाये, किन्तु मनुष्यों का जिस रूप में उन्होंने निर्माण किया था, उसका समसामयिक महत्त्व बराबर बना रहेगा।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तेन्दुलकर डी.पी., हिज लाइफ एण्ड वर्कस, भाग 1, प्रशासन विभाग भारत सरकार नई दिल्ली, पृ० 182
2. बम्बवाल कृपाराम भारतीय राजनीति और शासन, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली पृ० 413
3. बहरपाल डॉ मनोज कुमार, भारतीय राजनीतिक चिंतक, हिमांशु पब्लिकेशन्स उदयपुर पृ० 218।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105032

4. गांधी इन्दिरा, महात्मा गांधी के सौ वर्ष, पृ० 98।
5. हरिजन 31 जुलाई 1937।
6. गांधी इन्दिरा, गांधी के सौ वर्ष, वही पृ 16 |
7. हुसैन जाकिर, नैतिक जागरूकता, महात्मा गांधी सौ वर्ष, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन, वराणसी, पृ० 132।
8. 15 मार्च 2015 अमरउजाला कॉम।

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com